

## पाइका वदिरोह: 1817

### प्रलिमिंस के लयि:

पाइका वदिरोह

### मेन्स के लयि:

पाइका वदिरोह के कारण एवं महत्त्व

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्र सरकार ने कहा है कि पाइका वदिरोह (Paika Rebellion) को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम नहीं कहा जा सकता।

- यह भी सुझाव दिया गया है कि इसे राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) की कक्षा 8 की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में केस स्टडी के रूप में शामिल किया जाए।
- वर्ष 2017 में पहली बार ओडिशा राज्य मंत्रिमंडल ने पाइका वदिरोह को पहले स्वतंत्रता संग्राम के रूप में घोषित करने हेतु केंद्र से औपचारिक रूप से आग्रह करने का प्रस्ताव पारित किया था।
- वर्ष 2018 में सरकार ने पाइका वदिरोह की याद में स्मारक सड़क और डाक टिकट जारी किया।

## प्रमुख बडि

- **पाइका वदिरोह के बारे में:**
  - पाइका (उच्चारण 'पाइको', शाब्दिक रूप से 'पैदल सैनिक') को 16वीं शताब्दी के बाद से ओडिशा में राजाओं द्वारा विभिन्न सामाजिक समूहों से वंशानुगत कर-मुक्त भूमि (नशि-कर जागीर) और उपाधियों के बदले सैन्य सेवाएँ प्रदान करने के लिये भरती किया गया वर्ग था।
  - जब अंगरेज़ यहाँ पहुँचे तो उस समय ओडिशा के गजपति शासक मुकुंद देव द्वितीय किसान मलिशिया (Peasant Militias) थे।
- **ब्रिटिश दमनकारी नीति:**
  - अंगरेज़ों के नए औपनिवेशिक प्रतिष्ठान और भू-राजस्व बंदोबस्त लागू होने से पाइको ने अपनी संपदा खो दी।
    - ओडिशा में ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद ब्रिटिश द्वारा पाइको के खिलाफ दमनकारी नीति अपनाई गई। उन्होंने समाज में अपनी पारंपरिक स्थिति खो दी और उनकी ज़मीन छीन ली गई।
  - अर्थव्यवस्था और राजस्व प्रणालियों में निरंतर हस्तक्षेप से किसानों का शोषण और उत्पीड़न हुआ, अंततः अंगरेज़ों के खिलाफ वदिरोह शुरू हो गया।
    - 'खुरदा' में पाइको के वदिरोह से पहले और बाद में पारालाखेमुंडी (1799-1814), घुमुसर (1835-36) एवं अंगुल (1846-47); कालाहांडी में कोंधों का वदिरोह (1855); तथा 1856-57 का सबारा में वदिरोह हुए।
    - इन वदिरोहों का नेतृत्व संपत्ति वाले ऐसे वर्गों ने किया था जिनकी स्थिति औपनिवेशिक हस्तक्षेपों से कमज़ोर हो गई थी।
- **पाइका वदिरोह:**
  - वर्ष 1817 का पाइका वदिरोह वर्ष 1857 के पहले सपिही वदिरोह से लगभग 40 वर्ष पूर्व हुआ था।
  - बकशी जगबंधु वदियाधर महापात्र भरमारबार राय, मुकुंद देव द्वितीय के सर्वोच्च सैन्य जनरल और रोडंगा एस्टेट के पूर्व धारक ने कोंधों के वदिरोह में शामिल होकर पाइका की एक सेना का नेतृत्व किया। उन्होंने 2 अप्रैल, 1817 को अंगरेज़ों का सामना किया।
    - पाइको को राजाओं, ज़मींदारों, ग्राम प्रधानों और साधारण किसानों का समर्थन प्राप्त था। यह वदिरोह शीघ्र ही प्रांत के विभिन्न भागों में फैल गया।
  - इस घटना में बानापुर में सरकारी भवनों में आग लगा दी गई, पुलिसकर्मियों की हत्या कर दी गई और ब्रिटिश खजाने को लूट लिया गया।
  - आगामी कुछ महीनों तक वदिरोह जारी रहा, लेकिन अंततः ब्रिटिश सेना ने उन्हें पराजित कर दिया। वदियाधर को वर्ष 1825 में जेल में डाल दिया गया था और चार वर्ष बाद जेल में रहने के दौरान उनकी मृत्यु हो गई।

## स्रोत: द हट्टि

